Roll No. : ..... Total Pages : 6

1381-P

First Year Arts Examination, 2017

HINDI LITERATURE

Paper – I

(काव्य)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

(खण्ड-अ) [Marks : 20]

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड-ब) [Marks : 50]

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड-स) [Marks : 30]

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड-अ)

(इकाई–I)

1. (i) 'प्रिय प्रवास' का मुख्य प्रतिपाद्य बताएं।

(ii) मैथिलीशरण गुप्त की दो कृतियों के नाम बताएं।

(इकाई–II)

(iii) जयशंकर प्रसाद किस 'वाद' के प्रतिनिधि कवि तथा इनकी फुटकर कविता संग्रह की कौन-सी कविता पाठ्यक्रम में संग्रह की गयी है ?

(iv) पंत के काव्य की प्रमुख विशेषता क्या है तथा 'नौका विहार' में कवि ने किस नदी का वर्णन किया है ?

(इकाई–III)

(v) महादेवी वर्मा के काव्य का मूल स्वर कौन-सा है ?

(vi) निराला किन दो वादों के कवि हैं ?

(इकाई–IV)

(vii) 'अनल किरीट' का अर्थ बताते हुए कवि का नाम एवं प्रमुख गुणधर्म बताएं।

(viii) अज्ञेय की पाठ्यक्रम में प्रयुक्त बावरा अहेरी, हरी बिछी घास तथा नदी-द्वीप किन भावों के प्रतीक हैं ?

(इकाई–V)

(ix) द्विवेदीयुगीन दो कवियों एवं दोनों की प्रमुख काव्य प्रवृत्ति का उल्लेख करें।

(x) शब्दालंकार और अर्थालंकार में क्या अन्तर है ?

खण्ड–ब

(इकाई–I)

2. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करें :

अब कहें सभी यह हाय ! विरूह विधाता
है पुत्र पुत्र ही, रहे कुमाता माता।
बस मैंने इसका बाह्य-मात्र ही देखा,
दृढ़ हृदय न देखा, मृदुल गात्र ही देखा।
परमार्थ न देखा, पूर्ण स्वार्थ ही साधा,
इस कारण ही तो हाय आज पट बाधा।
युग-युग तक चलती रहे कठोर कहानी
रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी।।

3. पावस ऋतु थी पर्वत प्रदेश,
पल-पल परिवर्तित प्रकृति वेश।
मेखलाकार पर्वत अपार,
अपने सहस्त्र दृग सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार-बार,
नीचे जल में निज महाकार।

(इकाई–II)

4. विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात।
वेदना में जन्म करूणा में मिलता आवास,
अश्रु चुनता दिवस इसका, अश्रु गिनती रात
जीवन विरह का जलजात।
आँसुओं का कोष उर, दृग अश्रु की टकसाल,
तरल जलकण से बने घन–सा क्षणिक मृदु गात।
जीवन विरह का जलजात।

5. वह इष्ट देव के मन्दिर की पूजा सी
वह दीप शिखा–सी शांत, भाव में लीन
वह क्रूर–काल–ताण्डव की स्मृति रेखा–सी
वह टूटे तरू की घुटी–लता–सी दीन
दलित भारत की ही विधवा है।

(इकाई–III)

6. खिली भू पर जब से तुम नारि,
कल्पना सी विधि की अम्लान,
रहे फिर तब से अनु–अनु देवि।
लुब्ध भिक्षुक से मेरे गान।
तिमिर में ज्योति–कली को देख,
सुविकसित, वृन्तहीन, अनमोल
हुआ व्याकुल सारा संसार
किया चाहा माया का मोल।

7. किन्तु हम हैं द्वीप।
हम धारा नहीं हैं।
स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप हैं स्रोत स्विनी के।
किन्तु हम बहते नहीं हैं क्योंकि बहना रेत होना है।
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।

(इकाई–IV)

8. महादेवी वर्मा के काव्य की भावगत विशेषताएँ बताएं।

9. अज्ञेय प्रयोगवादी कविता के सर्वाधिक प्रयोगशील कवि हैं, सिद्ध करें।

(इकाई–V)

10. 'नयी कविता' परिस्थितियों एवं प्रवृत्तियों का विवेचन करें।

11. सवैया तथा छप्पय छंद एवं अनुप्रास तथा यमक अलंकार की उदाहरण सहित परिभाषा बताएं।

(खण्ड-स)

(इकाई–I)

12. 'मैथिलीशरण गुप्त रचित 'साकेत' उनके श्रेष्ठत्व का अनूठा उदाहरण है। सिद्ध करें।

(इकाई–II)

13. कवि दिनकर की यथार्थवादी काव्यधारा का विवेचन करें।

(इकाई–III)

14. आधुनिककालीन कविता का प्रस्थान बिन्दु नवजागरण की चेतना जगाता है और नयी कविता का प्रस्थान मोहभंग की प्रक्रिया से गुजरा था। इस कथन के आलोक में प्रारंभ से स्वतन्त्रता के मध्य की कविता यात्रा को वर्णित करें।

अथवा

संदेह, दृष्टांत, उदाहरण एवं अर्थतान्तरन्यास अलंकार को लक्षण एवं उदाहरण से स्पष्ट करें।